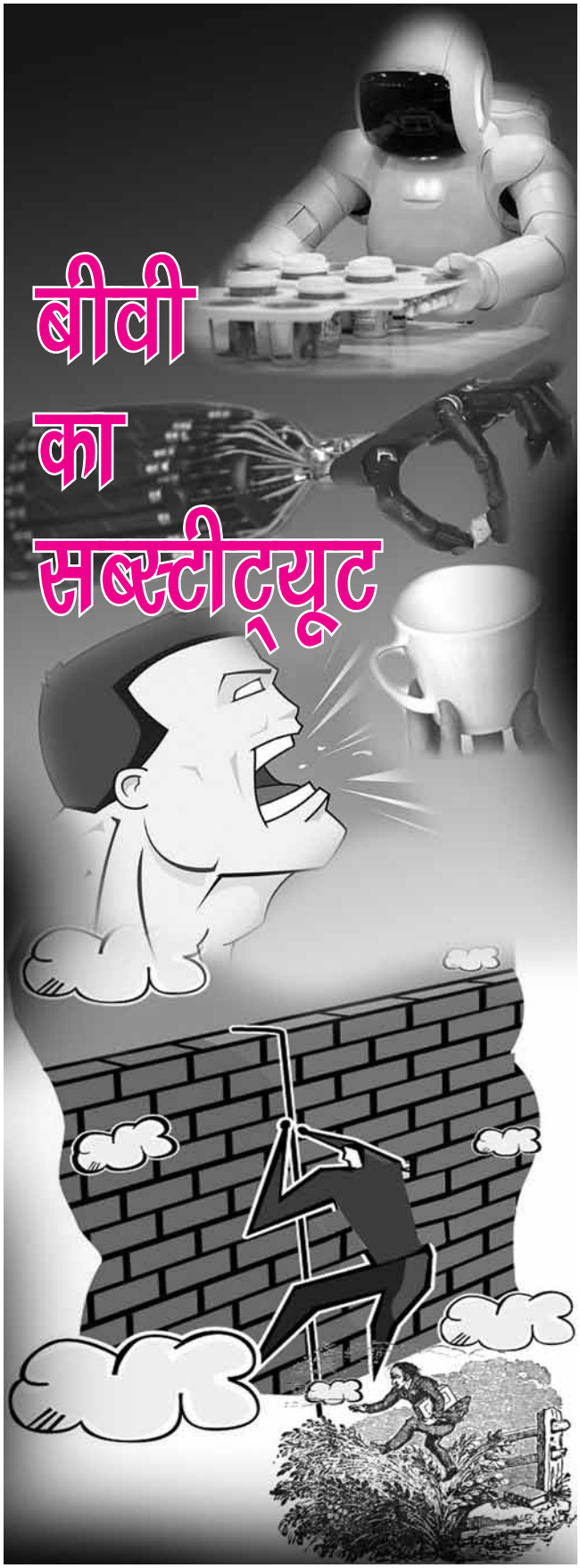

निरूपमा श्रीवास्तव

" ट्रिन ऽऽऽ ! .... ट्रिन ऽऽऽ ! ! "

" हैलो ! "

" हाँ, मालती ! ..... "

फोन सुन कर मालती के हर्ष का पारावार न रहा। उनके मायके में उनके भाई को पुत्ररत्न जो प्राप्त हुआ था और खुशी के इस अवसर पर वे पति व बच्चों समेत सादर आमन्त्रित थीं। जिस भाई को उन्होंने गोद में खिलाया था वह पहली बार पिता बना था और वह स्वयं पहली बार बुआ बनी थीं। मायके के सुखपूर्ण प्रवास की मधुर स्मृतियाँ उनके मानस-पटल पर लहक गईं।

परन्तु तभी उनको ध्यान आया कि दिल्ली जाने के लिए तो पहले उन्हें अपने 'सनकी बॉस' को लिखित रूप से छुट्टी हेतु आवेदन देना होगा।

मालती के पति श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा, जो कुछ माह पूर्व तक भारतीय खाद्य निगम, आगरा में क्लर्क थे, पदोन्नति पाकर अकस्मात् लेखा-अधिकारी बन गए थे। अब वे पहले जैसे सीधे-साधे शर्मा जी नहीं रहे। कुछ शुभचिन्तकों ने अफसरी अनुशासन, समय की पाबन्दी और हर काम को योजनाबद्ध तरीके से करने का फायदा उपदेशों की घुट्टी में पिला-पिला कर शर्मा जी की कायापलट ही कर दी थी। क्या मजाल थी कि दफ्तर की एक पाई भी बिना उनकी इजाजत के इधर-उधर हो जाए? कोई बिल भी तभी पास होता था जब 'साहब' को उचित लगता था। अनुशासनप्रिय व समय के पाबन्द तो शर्मा जी इस कदर हो गए थे कि उठते-बैठते हरदम उनके अधीनस्थ कर्मचारियों को 'साहब' का खटका यूँ लगा रहता जैसे चूहों को बिल्ली का।

यह सब दफ्तर तक तो ठीक था परन्तु स्थिति तब जटिल हो गई जब शर्मा जी घर को भी दफ्तर समझने लगे और घर में अपने बीवी-बच्चों को दफ्तर के अधीनस्थ कर्मचारियों-सा मान उनके साथ अफसर का सा बर्ताव करने लगे। नाश्ते-खाने के व्यंजनों की सूची से लेकर घर की हर छोटी-बड़ी खरीदारी तक के लिए 2-1 दिन पहले से मालती यानि मिसेज शर्मा और बच्चों को शर्मा जी के समक्ष प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करना पड़ता था। 5 वर्षीय बन्टू जो कल तक अपने क्लर्क पिता की आँखों का तारा था, आज अपने अफसर पिता का चपरासी बन गया था जो घर में अफसर व कर्मचारियों के मध्य अर्जियों व आदेशों की पर्चियों को इधर-उधर करता रहता था।

बच्चों ने ननिहाल जाने की बात सुनी तो खुशी से झूम उठे। दरअसल घर के दफ्तरी माहौल ने उनका भी बचपन छीन लिया था। अब वे प्रसन्न थे कि कम से कम 10-15 दिन उन्हें आजादी से रहने का मौका मिलेगा ।

शाम को ठीक साढ़े पाँच बजे जब शर्मा जी घर पधारे तो भोजन-कक्ष में चाय के साथ उन्हें 15 दिन तक दिल्ली-प्रवास हेतु छुट्टी की कारण सहित याचना करते हुए मीना, पिंकू, बन्टू और मिसेज शर्मा द्वारा एक-एक अर्जी पेश की गई।

शर्मा जी ने चाय की चुस्कियाँ लेते हुए अर्जियों पर एक सरसरी निगाह डाली। फिर ठेठ अफसर की तरह एक-एक कर अपने सभी अधीनस्थों को घूरा।

थोड़ी देर बाद उन्होंने कहना शुरु किया -

"किसी भी संस्था का कामकाज उसके कर्मचारियों पर टिका होता है। संस्था के सभी कर्मचारी यदि एक साथ छुट्टी पर चले जाएँ तो संस्था तो ठप्प हो जाएगी। द लीव देयरफोर कैन नॉट बी सैंक्शन्ड टू ऑल ऑफ यू ! अण्डरस्टैण्ड?"

सुनते ही बच्चों के बल्ब फ्यूज हो गए। मिसेज शर्मा मायूस हो गईं - लगता है अबकी बार वह मायके नहीं जा पाएंगी।

पर तभी -

"चूँकि हेडक्लर्क की जिम्मेदारी सबसे अधिक होती है और इमरजेन्सी में वह

अपने अकेले दम पर भी संस्था का कामकाज जारी रख सकता है। अतः हेडक्लर्क यानि मिसेज शर्मा के अलावा बाकी लोग छुट्टी पर जा सकते हैं।" शर्मा जी अफसरी रौब से बोले।

बच्चे खुशी से उछल पड़े -"थैंक यू सर! थैंक्स ए लॉट !! हिप-हिप हुर्रे !!! अब हम नानी के यहाँ जाएंगे और छोटे मुन्ने को खिलाएंगे।"

सभी बच्चे उछलते-कूदते अपने कमरे में जाकर दिल्ली-प्रवास के दौरान की जाने वाली मौज-मस्ती की योजनाएँ बनाने लगे।

उधर, मिसेज शर्मा सशंकित हो उठीं - केवल बच्चों को छुट्टी! छोटे-छोटे बच्चे आखिर इतनी दूर दिल्ली जाएंगे कैसे ? क्या उन्हें लेकर शर्मा जी स्वयं जाएंगे??

थोड़ी देर बाद शर्मा जी ने फिर मुँह खोला-

"लेकिन मौके की नजाकत और अन्य अधीनस्थों की नाबालिग उम्र को देखते हुए हेडक्लर्क की भी छुट्टी एक शर्त पर मंजूर की जा सकती है।"

"शर्त? कैसी शर्त??" मिसेज शर्मा की आँखें फैल गईं।

"जितने दिन की आप छुट्टी चाहती हैं उतने दिन के लिए यदि आप अपना सब्स्टीट्यूट दे दें तो; ताकि संस्था का कामकाज सुचारु रूप से चलता रहे।" शर्मा जी ने पूरी गम्भीरता से कहा।

मिसेज शर्मा झल्ला पड़ीं, " आप कहना क्या चाहते हैं? क्या मैं अपनी जगह किसी दूसरी औरत को आपकी बीवी बना कर रख जाऊँ? आपको अपनी सनक में न लाज है न शर्म। लोग क्या कहेंगे? समाज में हमारी कितनी हँसी होगी? अरे घर 'घर' होता है दफ्तर नहीं, जो आप बीवी का सब्स्टीट्यूट माँग रहे हैं!! " कहते-कहते मिसेज शर्मा का स्वर रुआँसा हो गया।

"थोथी दलीलों से अधिकारियों के फैसले नहीं बदला करते मैडम ! यदि आप शर्त पूरी कर सकती हैं तो आपकी छुट्टी मंजूर, अदरवाइज़ कैन्सिल। दैट्स ऑल।" कह कर शर्मा जी मुस्कराए और कन्धे उचकाते हुए बैठक में चले गए।

आज पहली बार शर्मा जी के सनकीपन ने मिसेज शर्मा की आँखें नम कर दी थीं। स्थिति अब बर्दाश्त के बाहर हो गई थी। मन-ही-मन उन्होंने शर्मा जी के सिर से घर पर अफसरी करने का भूत उतारने का निश्चय कर लिया।

मिसेज शर्मा कोई अनपढ़ और गवाँर स्त्री नहीं थीं। उनका शैक्षिक जीवन काफी उज्ज्वल रहा था और वह कम्प्यूटर की एक अच्छी प्रोग्रामर थीं। विवाह से पूर्व वह घरेलू रोबोट बनाने वाली एक कम्पनी में कार्यरत थीं और रोबोटों में प्रोग्रामिंग किया करती थीं। दूसरे ही दिन उन्होंने अपनी घरेलू बचत के पैसों से एक परमाणु ऊर्जा-चालित घरेलू रोबोट खरीदा और उसमें अपने पतिदेव की पूरी दिनचर्या से सम्बन्धित घरेलू कामकाज की प्रोग्रामिंग कर रोबोट को अपने विकल्प के रूप में आनन-फानन तैयार कर दिया।

अगले दिन सुबह-सुबह मिसेज शर्मा मायके जाने के लिए सामान समेत बच्चों के साथ तैयार खड़ी थीं।

शर्मा जी ने उन्हें प्रश्नसूचक निगाह से देखा।

उत्तर में मिसेज शर्मा ने बरामदे के एक कोने में खड़े हुए आदमकद रोबोट का कवर हटा दिया।

शर्मा जी की आँखों में आश्चर्य तैर गया, "ह्वॉट?. ..... ह्वॉट इज़ दिस ?? "

" ये है मेरा विकल्प।"

" तुम्हारा विकल्प ..... यू मीन, योर सब्स्टीट्यूट?"

" यस, माई सब्स्टीट्यूट! मैंने आपकी पूरी दिनचर्या की प्रोग्रामिंग व टाइमसेटिंग इसमें कर दी है। यह आपके और घर के सारे कार्य बिल्कुल नियत समय पर कर दिया करेगा। अब मैं बच्चों समेत पन्द्रह दिनों के लिए दिल्ली जा रही हूँ। चौदह दिनों के बाद आप भी वहाँ आ जाइएगा।"

शर्मा जी निरुत्तर रह गए। मिसेज शर्मा बच्चों सहित अपने मायके दिल्ली चली गईं।

रोबोट ने शर्मा जी को नियत समय पर लंच-पैक दे दिया। शर्मा जी ऑफिस चले गए।

शाम ठीक साढ़े पाँच बजे जब उनका स्कूटर घर के सामने रुका तो तत्क्षण उन्होंने देखा कि रोबोट ने दरवाजा खोल दिया है।

वे रोबोट की समयबद्धता से अति प्रसन्न हुए। गुनगुनाते हुए वे घर में घुसे।

रोबोट ने पाँच मिनट बाद दरवाजा बन्द कर उन्हें बदलने के लिए साफ धुले, प्रेस किए कपड़े दिए और खाने-पीने को बढ़िया चाय-नाश्ता दिया।

सब काम बिल्कुल ठीक चल रहा था। रोबोट बिना कोई शोर-शराबा और ऊल-जलूल हरकत किए, बिना किसी त्रुटि के सारे काम ठीक-ठीक तरीके से यथा समय कर रहा था।

शर्मा जी मन-ही-मन अपनी पत्नी की सुगढ़ता पर विमुग्ध थे।

दो-तीन दिन काफी आनन्द व शान्ति से गुजरे।

लेकिन शर्मा जी को अब घर पर कोई काम न था। पहले तो वे घर में आते ही बच्चों को उनकी ऊटपटांग हरकतों के लिए डाँटते रहते थे, सबको अनुशासन और समयबद्धता के नुस्खे, उसके नफा-नुकसान समझाते रहते थे; अर्जियाँ पढ़ते थे; अर्जियों पर आवश्यक कार्यवाही हेतु टिप्पणियाँ लिखते थे; ग्रान्ट सैंक्शन करते थे; क्रय किए हुए 'माल' की जाँच करते थे; ऑडिट करते थे और इसी तरह के अफसरशाही के अनगिनत कार्यों को करते-कराते जब रात के नौ बज जाते थे तो अफसरों के समान अकेले ही डिनर लेते थे। फिर बिस्तर पर पसर कर वे टी.वी. पर कोई मनपसन्द धारावाहिक या वी. सी. आर. पर थोड़ी बहुत फिल्म देखते थे। कभी-कभी मूड होने पर वे टू-इन-वन में 'छायागीत' सुनते थे या कैसेट लगा कर पसन्दीदा गाने सुनते थे और ठीक साढ़े दस बजे सोने के लिए आँखें मूँद लेते थे।

पर अब? अब समय उनसे काटे नहीं कट रहा था।

शर्मा जी किसी से दो बोल बोलने को भी तरस गए। अफसरी रौब के मारे पड़ोसियों से भी वे खुद को अलग रखते थे ..... और घर में था भाँय-भाँय करता सन्नाटा या फिर रोबोट के चलने व काम करने की सर्र-सर्र..घर्र-घर्र आवाजें।

घर के सभी अधीनस्थ कर्मचारियों के चले जाने से अब शर्मा जी के जेहन में बसा घर के अफसर वाला रूप धीरे-धीरे धूमिल पड़ने लगा था। सच है जब कोई अधीनस्थ ही नहीं, तो बेचारा एक अदद अकेला आदमी अफसरी करे भी तो भला किस पर?

चौथे दिन रोबोट ने रोज की तरह शर्मा जी को ठीक सुबह सात बजे जगा दिया।

शर्मा जी थोड़ी सी कशमकश के बाद बड़बड़ाते हुए उठ बैठे -

"क्या मुसीबत है? कमबख्त सोने भी नहीं देता।"

लेकिन थोड़ी ही देर बाद वे पुनः रजाई में दुबक गए।

ठीक 7.20 पर रोबोट ने बेड टी मेज पर लगा दी। जानकर भी शर्मा जी आलस्य के मारे रजाई में दुबके रहे।

अभी पन्द्रह मिनट बीते ही होंगे कि रोबोट के चलने की सरसराहट से शर्मा जी चौंके। रजाई से मुँह निकाल कर थोड़ा उचक कर उन्होंने चाय का प्याला उठाने के लिए हाथ बढ़ाया तो चाय का प्याला मेज पर से नदारद था।

चाय का प्याला रोबोट के हाथ में देखते ही शर्मा जी बिस्तर से उछल कर खड़े हो गए और रोबोट के पीछे भागे।

"अरे... रे... मेरी चाय ....? कप कहाँ ले जा रहे हो? अभी तो मैंने चाय .... !"

शर्मा जी अपनी बात पूरी कर भी न पाए थे कि रोबोट ने चाय का प्याला किचेन के सिंक में रख कर उस पर पानी उड़ेल दिया और प्याला धोकर किचेन के प्लेटफार्म पर रख कर एक ओर खड़ा हो गया।

शर्मा जी रोबोट पर बरस पड़े - "अबे मूरख! अन्धा है क्या? तुझे दिखाई नहीं दिया कि कप चाय से भरा था। मैंने चाय नहीं पी थी। जरा इन्तजार नहीं कर सकता था?"

शर्मा जी की कड़क आवाज से रोबोट की कैमरे वाली आँखें चमकीं। फिर उसके मुँह से घरघराती मशीनी आवाज निकली, "आई डोन्ट नो हाऊ टू एक्जीक्यूट दिस कमाण्ड। फाइल नॉट फाउन्ड।"

रोबोट की बात शर्मा जी के सिर से दो फुट ऊपर निकल गई।

जैसे-तैसे भुनभुनाते हुए वे रसोई में चाय बनाने घुसे। उस सर्द सुबह अपने हाथ की बनी बेड टी पीते हुए शर्मा जी सर्द आहें भरते रहे।

नित्यकर्मों से निपट कर वे अनमने ढंग से बैठक में जा बैठे।

अखबार आ गया था। वे अखबार की सुर्खियाँ देखते-देखते उसमें इतना खो गए कि उन्हें वक्त का ध्यान ही न रहा। घड़ी ने जब टन्-टन् कर नौ बजाए तो उनका ध्यान भंग हुआ।

यह उनके नहाने का समय था किन्तु आज उनका

मन समयबद्ध होकर काम करने का नहीं था।

उखड़े-उखड़े मूड से अलसाए से वे घड़ी के हिलते पेण्डुलम और शनैः शनैः सरकती हुई सुईयों को देखते रहे।

'ट ऽ ऽ न्न् !' घड़ी ने साढ़े नौ बजा दिए।

उफ! दफ्तर तो जाना ही पड़ेगा। आज बड़े साहब के साथ जरूरी मीटिंग जो है। - सोचते हुए शर्मा जी स्नानगृह की ओर बढ़े।

स्नानगृह में जल्दी-जल्दी नहाकर एक हाथ में तौलिया लेकर मुँह पोंछते हुए उन्होंने नहाकर पहने जाने वाले कपड़े रखने के स्थान की ओर अपना दूसरा हाथ बढ़ाया तो उनका हाथ अलमारी के फर्श से टकरा कर लौट आया।

कपड़े कहाँ गए ? क्या रोबोट ने आज कपड़े नहीं रखे? - सोचते हुए शर्मा जी गीला तौलिया लपेट कर बाहर निकले। उन्होंने देखा ऑफिस जाने वाले प्रेस किए हुए साफ धुले कपड़े धो-धो कर रोबोट सूखने के लिए तार पर फैला रहा था।

शर्मा जी ने अपना सिर पीट लिया, "किस अहमक से पाला पड़ गया?"

बड़बड़ाते हुए कमरे में जाकर उन्होंने कपड़ों की अलमारी खोली।

अलमारी में सभी कपड़े पहने हुए और गन्दे टँगे थे।

दरअसल रोबोट रोज केवल दो जोड़ी कपड़े धो-सुखा कर प्रेस करता था, एक जोड़ी घर में पहनने के लिए और दूसरा ऑफिस जाने के लिए। पर आज? आज सारा मामला गड़बड़ा गया था। आज गन्दे कपड़े सूखे थे और साफ गीले।

सुधीजन आजकल जिस तरह भ्रष्ट नेताओं में से कम भ्रष्ट नेताओं को विवशतः चुन लेते हैं; ठीक उसी तरह शर्मा जी ने सबसे कम गन्दी पैन्ट-शर्ट को निकाला और नाक-भौं सिकोड़ते हुए पहना। उनका मूड बुरी तरह ऑफ हो गया था।

बिना नाश्ता किए और बिना लंच पैक लिए ही उन्हें दफ्तर भी जाना पड़ा क्योंकि समय के पाबन्द रोबोट ने खाने की मेज पर नाश्ता व लंच पैक जब रखा तब वे गन्दे कपड़ों में साफ कपड़े ढूँढ रहे थे। जल्दी-जल्दी गन्दे कपड़े पहन कर इससे पहले कि वे मेज तक पहुँचते सारी खाद्य सामग्री कूड़ेदान में फेंक दी गई थी और बर्तन साफ कर दिए गए थे।

शाम को ठीक समय पर घर पहुँचने के निश्चय से जब शर्मा जी दफ्तर से घर की ओर चले तो दो-एक मित्र भी साथ हो लिए। शर्मा जी के बीवी के सब्स्टीट्यूट की सोंधी खबर उन्हें मिल चुकी थी और उसे देखने का लोभ वे संवरण नहीं कर पा रहे थे।

खैर! घर में घुसने तक सबकुछ ठीक-ठाक रहा।

शर्मा जी का मूड कुछ फ्रेश हुआ। प्रसन्न वदन उन्होंने बैठक में बैठे-बैठे ही रोबोट को चार कप चाय और बढ़िया नाश्ता लाने का आदेश दिया।

थोड़ी ही देर में सबकुछ हाजिर था।

एक मित्र ने चुटकी ली, "वाह, शर्मा जी! ये अच्छा नमूना पाल रखा है आपने! बीवी की रोज-रोज की न हाय-हाय, न चिखचिख! हम भी सोचने लगे हैं कि बीवी को मायके भेज एक ऐसा ही पालतू ले आएँ।"

शर्मा जी का अतिथिगृह समवेत् ठहाकों से गूँज उठा।

शर्मा जी के आग्रह पर मित्रों ने चाय का प्याला उठाया।

अभी एक मित्र महोदय ने चाय का घूँट भरा ही था कि चाय मुँह से बाहर आ गई और वे प्याले में ही 'आक्...थू , आक्...थू' करने लगे।

दूसरे ने बुरा सा मुँह बनाया मानों मुँह में चाय न होकर मिर्च का शोरबा हो।

तीसरे से न रहा गया। उसने पूछा, "शर्मा जी! क्या आप नमकीन चाय पीते हैं?"

शर्मा जी का मुँह ताज्जुब से खुला का खुला रह गया- "क्या? नमकीन चाय?? नहीं तो!"

अविश्वास से भरे शर्मा जी ने लपक कर चाय का घूँट भरा। बात सही थी। सुबह से जज्ब सारी कड़वाहट उनके मन-मस्तिष्क से निकल कर जबान पर आ गई। वे वहीं एक ओर खड़े रोबोट से मुखातिब होकर दहाड़े, "अरे बेवकूफ! चाय में नमक क्यों डाल दिया? चाय बनाना भूल गया क्या?"

उत्तर में रोबोट के गलेनुमा यन्त्र से घरघराट निकली - "द कमाण्ड इज़ नॉट वैलिड।"

तत्क्षण शर्मा जी को ख्याल आया कि दरअसल कुसूर रोबोट का नहीं, खुद उनका ही था। उन्होंने ही सुबह चाय बनाते समय चीनी के डिब्बे को यथास्थान रखने पर ध्यान नहीं दिया था।

उन्होंने अपनी गलती स्वीकार करते हुए मित्रों से माफी माँगी।

"भई ! मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ। इस अक्ल के अन्धे से तो अपनी बीवी ही भली। कम-से-कम शहद सी मीठी चाय तो पिलाती है।"

सब फिर ठहाका मार कर हँस पड़े।

झेंपते हुए शर्मा जी को भी खिसियाहट भरी हँसी से उनका साथ देना पड़ा।

शर्मा जी ने समय का पाबन्द और सावधान रहने का निश्चय किया। वे समझ गए थे कि इसके बगैर गुजारा होना मुश्किल है। श्रीमती जी के आने में तो अभी भी पूरे ग्यारह दिन बाकी थे।

अगले दिन शर्मा जी ने फुर्ती दिखाई। ठीक समय पर हर काम ठीक-ठाक ढंग से निपट गया।

किन्तु ?

शाम को शर्मा जी सवा पाँच बजे ही घर आ गए। बार-बार कॉलबेल बजाने पर भी जब घर का दरवाजा नहीं खुला तो शर्मा जी को ध्यान आया कि रोज तो वे ठीक साढ़े पाँच बजे घर आते थे; आज 15 मिनट पहले आ गए हैं। अब साढ़े पाँच बजने का इन्तजार करने के अलावा उनके पास और कोई चारा न था।

शर्मा जी लॉन में टहलने लगे।

घर का बन्द दरवाजा और लॉन में शर्मा जी को टहलता देखकर पड़ोस के बनारसी बाबू से न रहा गया और वे शर्मा जी के लॉन के दरवाजे पर आकर उनकी कुशल-क्षेम पूछने लगे। बातों-बातों में शर्मा जी को समय का अन्दाजा ही न रहा; जब ख्याल आया तब पाँच बजकर पैंतीस मिनट हो चुके थे और रोबोट दरवाजा खोलने के बाद बन्द कर रहा था।

"अरे-अरे ... रुको-रुको! मैं आ रहा हूँ।" कहते हुए शर्मा जी बदहवास होकर घर के दरवाजे की ओर भागे।

फिर भी कुछ सेकंडों की देरी हो ही गई। दरवाजा बन्द हो चुका था।

शर्मा जी का पारा सातवें आसमान पर जा पहुँचा। उन्होंने बेतहाशा दरवाजा पीटना व चिल्लाना शुरु कर दिया; किन्तु सब व्यर्थ!

रोबोट वहीं दरवाजे के पास खिड़की के सामने निश्चल खड़ा था। शर्मा जी की हर चीख-चिल्लाहट के जवाब में वह कुछ ही शब्द बार-बार दुहरा रहा था - "कमाण्ड इज़ नॉट वैलिड! .... आई डोन्ट नो हाऊ टू एक्जीक्यूट दिस कमाण्ड .... फाइल नॉट फाउन्ड... . कमाण्ड इज़ नॉट .....!"

"अजी शर्मा जी! आप व्यर्थ चिल्ला रहे हैं। यह बेजान पुतला है, आपकी बीवी नहीं; जो आपके गुस्से और आपकी बातों को समझेगा। अब तो यह कल शाम को ही ठीक साढ़े पाँच बजे दरवाजा खोलेगा।" बनारसी बाबू ने चुटकी लेते हुए मुस्कुरा कर कहा।

"भला इसी में है कि आप पीछे की दीवार फलांग कर आँगन में कूदें; तभी आज घर में घुस सकेंगे।" एक दूसरे पड़ोसी निगम साहब ने, जो अभी-अभी अपने दफ्तर से आए थे, शर्मा जी को अपनी नेक सलाह से नवाजा।

शर्मा जी जबसे अफसर बने थे, उन्होंने निगम साहब की ओर देखना तक छोड़ दिया था किन्तु आज उन्हें उनकी सलाह रिसते घावों पर मरहम जैसी लगी।

आँगन में कूदने का निर्णय तत्क्षण उन्होंने लिया और घर के पिछवाड़े जाकर आँगन में कूद गए।

बचपन ने जब से उनका साथ छोड़ दिया था उन्होंने भी बन्दरों की सी उछल-कूद को तिलांजलि दे दी थी। अब उन्हें कूदने का कोई अभ्यास न था। आँगन की दीवार काफी ऊँची थी। शर्मा जी के बाँए हाथ की कलाई में मोच आ गई।

ज्योंही उन्होंने कराहते हुए बरामदे में प्रवेश किया त्योंही उन्होंने रोबोट को फोन पर कहते सुना -

" इज़ दिस कोतवाली सर? सर ! देयर आर सम अनयूजुअल वायसेज़ इन द हाउस! परहेप्स समवन हैज़ जम्प्ड इनटू द हाउस इन एन अनअथराइज्ड वे। वी आर हैविली अनसेफ सर! प्लीज, कम वेरी सून एट 7 ओवर 10 मालती भवन, रामकृष्णनगर, आगरा, एण्ड अरेस्ट हिम।"

"हे भगवान्! अब यह नामुराद पुलिस को क्यों बुला रहा है?" शर्मा जी क्रोध से तिलमिला उठे।

वे झपटते हुए रोबोट के पास पहुँचे और उन्होंने रोबोट के हाथ से रिसीवर छीन कर उसे परे ढकेलना चाहा; किन्तु .... रोबोट को छूते ही एक शक्तिशाली झन्नाटेदार थप्पड़ शर्मा जी की बत्तीसी हिला गया।

"सॉरी सर! बाई टचिंग मी, यू हैव रन द पैकेज दैट इज़ प्रोग्राम्ड फॉर माई सेल्फप्रोटेक्शन। इट इज़ बेटर एण्ड सेफ फॉर यू ,नॉट टू टच मी एट ऑल। थैंक यू!"

रोबोट की घरघराहट ने शर्मा जी को अत्यन्त दयनीय स्थिति में पहुँचा दिया। वे खिसियाए से दाँत पीस कर रह गए।

तभी आनन-फानन में वहाँ पुलिस आ पहुँची और उसने शर्मा जी के घर के चारों ओर घेराबन्दी कर दी ताकि चोर कहीं से भी भागने न पाए।

अड़ोसी-पड़ोसी पुलिस को देख कर अचम्भे में पड़ गए - क्या वाकई घर में चोर है और उसने शर्मा जी को बन्धक बना लिया है?

उन लोगों ने दरोगा को पूरी बात समझाते हुए बताया कि शर्मा जी तो घर के अन्दर ही हैं। कहीं वे किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गए?

बाहर से - "शर्मा जी! शर्मा जी!! आप ठीक तो हैं? क्या घर में चोर घुसा है?" की आवाजें सुनते ही शर्मा जी ने दरवाजा खोला।

घर में घुसते ही सूजा गाल लिए दर्द से कराहते हुए केवल शर्मा जी और रोबोट के हाथ में रिसीवर को देखते ही सारा माजरा सबकी समझ में आ गया।

पूरे मोहल्ले में शर्मा जी का मखौल बन गया। पुलिस-कांस्टेबिल भी मजा ले रहे थे किन्तु दरोगा बहुत नाराज था। बिला वजह उसे अपनी शक्ति और समय व्यर्थ जो करना पड़ा था। उसने शर्मा जी को अच्छी-खासी डाँट पिलाते हुए भविष्य में सावधान रहने का निर्देश दिया और कांस्टेबिलों समेत वापस चला गया।

मन-ही-मन शर्मा जी ने तत्काल एक अहम् निर्णय लिया और उसी रात मिसेज शर्मा को वापस लाने ससुराल को रवाना हो गए।

ससुराल में निश्चित समय से काफी पूर्व शर्मा जी को आया देख कर बच्चों के नाना-नानी आश्चर्य में पड़ गए।

"जीजा जी आप! इतनी जल्दी?... सब कुशल-मंगल तो है?... आपकी तबियत तो ठीक है?"

बच्चों के मामा भी अचरज से भर उठे।

किन्तु मिसेज शर्मा को जरा भी ताज्जुब न हुआ। आगरे में जो कुछ घटित हो चुका था उसका अन्दाजा उन्हें शर्मा जी को देखते ही हो गया था।

मिसेज शर्मा को देख कर शर्मा जी अपने को रोक न सके - "मालती! प्लीज घर चलो। तुमने अपना जो सब्स्टीट्यूट दिया है, तंग आ चुका हूँ मैं उससे। मैं अब उसे और सहन नहीं कर सकता।"

"माइण्ड योर लैंग्वेज सर! ममी इज़ नॉट योर मालती ओनली। शी इज़ आलसो द रेस्पेक्टेड हेडक्लर्क इन द फेमिली .... और उनकी अगले 9 दिनों की छुट्टी भी आलरेडी सैंक्शन्ड है।" बेटी मीना ने दिल की भड़ास निकाली।

"और सर! हम तीनों भी अभी अगले 9 दिनों तक छुट्टी पर ही रहेंगे। छुट्टियाँ खत्म होने पर ही हम सब ऑफिस ज्वाइन करेंगे।.... यदि आप हमारी छुट्टियाँ कैन्सिल करेंगे तो हम सब हड़ताल पर चले जाएंगे। " पिंकू भी अब खुल गया था।

"सॉरी बच्चों!... सॉरी मालती!! आई एम वेरी मच शेमफुल। मैं तुम सबको 'ऑफिस' नहीं, घर ले जाने के लिए आया हूँ। मैं समझ गया हूँ कि घर घर होता है, ऑफिस नहीं। ऑफिस में किसी के सब्स्टीट्यूट से काम चल सकता है लेकिन बीवी का तो कोई सब्स्टीट्यूट हो ही नहीं सकता।" शर्मा जी ने कातर स्वर में याचना करते हुए कहा।

मिसेज शर्मा मन ही मन मुस्करा रही थीं। उनका चेहरा विजय के दर्प से दमक रहा था।

परन्तु शर्मा जी की कातर अनुनय-विनय के सामने वह और बच्चे अधिक देर तक कठोर न रह सके और 'छुट्टी' खत्म होने से पहले ही आगरा वापस चलने को राजी हो गए।

आखिर वे इन्सान थे, कोई रोबोट तो नहीं।

संपर्क सूत्र :
डा. (श्रीमती) निरुपमा श्रीवास्तव, 19 अशफाकउल्लाह कालोनी, सुभाष नगर, फैजाबाद (उ.प्र.)